Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2026: 8.739,
https://www.srjis.com/issues_data/295
PEER REVIEWED, REFEREED & INDEXED JOURNAL, JUNE-JULY 2026, VOL-14/76

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में बहुविषयक एवं समग्र शिक्षा : हिन्दी शिक्षण-प्रथाओं के रूपांतरण का विश्लेषण

Dr. Asha Chhabra
Assistant Prof., Satish Public College of Education, Rewari, Haryana
Dr. Arti Pasricha
Assistant Professor, Satish Public College of Education, Rewari, Haryana

Paper Received On: 21 JUNE 2026
Peer Reviewed On: 25 JULY 2026
Published On: 01 AUG 2026

Abstract

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को रटने एवं परीक्षा-केंद्रित अधिगम से हटाकर वैचारिक समझ, ज्ञान के प्रयोग, सृजनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, बहुभाषिकता तथा विद्यार्थी के समग्र विकास की ओर उन्मुख करती है। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ-एसई) 2023 इस दृष्टि को पाठ्यचर्या, शिक्षण-अधिगम और आकलन के स्तर पर आगे बढ़ाती है। इस परिवर्तन का भाषा-शिक्षण, विशेषतः हिन्दी शिक्षण, पर व्यापक प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य एनईपी 2020 तथा एनसीएफ-एसई 2023 के संदर्भ में हिन्दी शिक्षण की बदलती शिक्षण-प्रथाओं का विश्लेषण करना है। अध्ययन गुणात्मक एवं वर्णनात्मक दस्तावेजीय विश्लेषण पर आधारित है। बहुभाषिकता, बहुविषयकता, समग्र विकास, शिक्षार्थी-केंद्रित अधिगम, अनुभवात्मक एवं सृजनात्मक अधिगम, साहित्य, तकनीकी संसाधनों तथा आकलन को विश्लेषण के प्रमुख आयाम बनाया गया है। अध्ययन का केंद्रीय तर्क है कि हिन्दी को केवल स्वतंत्र विषय के रूप में नहीं, बल्कि ज्ञान के निर्माण, समझ, संप्रेषण और अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में देखना आवश्यक है।

अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि विद्यार्थियों की मातृभाषा, स्थानीय भाषा और क्षेत्रीय भाषायी अनुभव हिन्दी-अधिगम के लिए संसाधन बन सकते हैं; हिन्दी और अन्य विषयों के बीच संबंध दोतरफा हो सकता है; साहित्य विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, भावात्मक, सृजनात्मक, सौंदर्यात्मक, सांस्कृतिक एवं मूल्यात्मक विकास का माध्यम बन सकता है; शिक्षक की भूमिका मार्गदर्शक एवं सुविधादाता की हो सकती है तथा आकलन को विविध अधिगम-अनुभवों और क्षमताओं को पहचानने वाला बनाया जाना चाहिए। अंततः अध्ययन नीतिगत दृष्टि और हिन्दी कक्षा के व्यवहार के बीच व्यावहारिक सेतु के रूप में कुछ सुझाव प्रस्तुत करता है।

1. प्रस्तावना

वर्तमान शिक्षा का उद्देश्य केवल निर्धारित पाठ्यवस्तु का ज्ञान प्रदान करना नहीं है। बदलते सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी और आर्थिक परिवेश में ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो विद्यार्थियों में चिंतन,

Copyright@2026 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सृजनात्मकता, समस्या-समाधान, संप्रेषण, सहयोग, संवेदनशीलता तथा ज्ञान के जीवनोपयोगी प्रयोग की क्षमता विकसित करे। एनईपी 2020 इसी व्यापक परिवर्तन की दिशा प्रस्तुत करती है और समझ, अनुभव, आलोचनात्मक चिंतन तथा ज्ञान के अनुप्रयोग को रटने और केवल परीक्षा-उन्मुख अधिगम की अपेक्षा अधिक महत्त्व देती है ।

बहुविषयक एवं समग्र शिक्षा की यह अवधारणा भाषा-शिक्षण के लिए विशेष महत्त्व रखती है। विद्यार्थी विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, पर्यावरण, कला, संगीत अथवा गणित का अध्ययन करते समय भाषा के माध्यम से विषय-वस्तु को समझता, प्रश्न करता, तर्क करता और व्यक्त करता है। अतः भाषा और अन्य विषयों का संबंध केवल किसी संयुक्त गतिविधि तक सीमित नहीं है; भाषा स्वयं ज्ञान के निर्माण और संप्रेषण की आधारभूत प्रक्रिया का हिस्सा है।

भारत की बहुभाषिक सामाजिक संरचना इस संदर्भ में एक महत्त्वपूर्ण शैक्षिक संसाधन प्रस्तुत करती है। एनईपी 2020 तीन-भाषा सूत्र में लचीलेपन के साथ कम-से-कम दो भारतीय भाषाओं के अध्ययन तथा जहाँ तक संभव हो प्रारंभिक कक्षाओं में मातृभाषा, स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से सीखने को प्रोत्साहित करती है। नीति किसी राज्य पर कोई भाषा थोपने के पक्ष में नहीं है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)।

एनसीएफ-एसई 2023 भी विद्यार्थियों के समग्र विकास, वैचारिक समझ, आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता, मूल्यों और विभिन्न ज्ञान-क्षेत्रों के बीच सार्थक संबंधों पर बल देती है (एनसीईआरटी, 2023)। इसलिए हिन्दी शिक्षण में परिवर्तन केवल नई गतिविधियाँ या तकनीकी साधन जोड़ने का प्रश्न नहीं है; यह शिक्षक, विद्यार्थी, साहित्य, भाषा, तकनीक और आकलन के संबंध में शिक्षण-दृष्टि के परिवर्तन का प्रश्न है।

2. अध्ययन के उद्देश्य एवं शोध-पद्धति

2.1 अध्ययन के उद्देश्य

- एनईपी 2020 और एनसीएफ-एसई 2023 में निहित बहुविषयक, समग्र एवं शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षा-दृष्टि के संदर्भ में हिन्दी शिक्षण की बदलती प्रकृति का विश्लेषण करना।
- भाषा-शिक्षा और बहुभाषिकता से संबंधित प्रमुख नीतिगत प्रावधानों का विश्लेषण करना तथा बहुभाषिकता को हिन्दी-अधिगम के संसाधन के रूप में समझना।
- हिन्दी और अन्य विषयों के बीच सार्थक संबंध तथा हिन्दी साहित्य के माध्यम से समग्र विकास की संभावनाओं का विवेचन करना।
- शिक्षार्थी-केंद्रित, अनुभवात्मक, संवादात्मक एवं सृजनात्मक शिक्षण में शिक्षक की बदलती भूमिका को स्पष्ट करना।
- हिन्दी शिक्षण में तकनीकी संसाधनों और बहुआयामी आकलन की संभावनाओं का विश्लेषण करना।
- कार्यान्वयन की चुनौतियों की पहचान करते हुए हिन्दी शिक्षण के लिए व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

2.2 शोध-पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक एवं वर्णनात्मक प्रकृति के दस्तावेजीय विश्लेषण पर आधारित है। अध्ययन के लिए एनईपी 2020, एनसीएफ-एसई 2023, एनसीईआरटी की संबंधित सलाह तथा बहुभाषिकता एवं भाषा-शिक्षा से संबंधित चयनित शोध-साहित्य का अध्ययन किया गया। विश्लेषण के प्रमुख आयाम बहुभाषिकता, बहुविषयकता, समग्र विकास, शिक्षार्थी-केंद्रितता, अनुभवात्मक अधिगम, सृजनात्मकता, साहित्य, तकनीकी संसाधन और आकलन रहे। नीतिगत प्रावधानों को हिन्दी शिक्षण की संभावित कक्षा-प्रथाओं से जोड़ा गया है।

अध्ययन का उद्देश्य नीतिगत प्रावधानों का मात्र पुनर्वर्णन करना नहीं, बल्कि उनके हिन्दी कक्षा के शिक्षणशास्त्रीय निहितार्थों को स्पष्ट करना है। कक्षा-उदाहरणों को अनुभवजन्य निष्कर्ष के रूप में नहीं, बल्कि नीतिगत एवं सैद्धांतिक विचारों को समझाने वाले उदाहरणों के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

3. संबंधित साहित्य का अवलोकन एवं शोध-अंतराल

एनईपी 2020 के बाद भाषा-शिक्षा, बहुभाषिकता और मातृभाषा-आधारित अधिगम पर शोध में वृद्धि हुई है। उपलब्ध साहित्य का एक प्रमुख निष्कर्ष यह है कि विद्यार्थियों की भाषायी पृष्ठभूमि को बाधा मानने के स्थान पर उसे अधिगम-संसाधन के रूप में देखने की आवश्यकता है।

सिंह (2025) ने हिन्दी शिक्षण के संदर्भ में एनईपी 2020 की भाषा-दृष्टि, मातृभाषा-आधारित शिक्षा, बहुभाषिकता तथा तकनीकी संसाधनों की संभावनाओं पर चर्चा की है। यह अध्ययन हिन्दी शिक्षण को नीति के व्यापक परिवर्तनों से जोड़ने के लिए उपयोगी आधार प्रस्तुत करता है।

झा और दलाल (2024) ने बहुभाषिक कक्षाओं में भाषाओं के लचीले पारस्परिक प्रयोग (ट्रांसलैंग्वेजिंग) अर्थात विद्यार्थियों की उपलब्ध भाषायी संसाधनों के लचीले उपयोग की आवश्यकता का अध्ययन किया। उनके अध्ययन में विद्यार्थियों ने भाषाओं के उपयोग को समझ, समावेशन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान से जोड़ा। यह हिन्दी कक्षा में स्थानीय भाषा अथवा मातृभाषा को संसाधन के रूप में स्वीकार करने की दृष्टि को समर्थन देता है (झा और दलाल, 2024)।

Tsimpli और Lightfoot के अध्ययन में दिल्ली, बिहार और हैदराबाद की 104 कक्षाओं तथा लगभग 2,500 विद्यार्थियों के अध्ययन से यह सामने आया कि वास्तविक कक्षाओं में शिक्षक और विद्यार्थी अनेक भाषाओं का उपयोग करते हैं। अध्ययन ने यह भी संकेत किया कि बहुभाषिक व्यवहार को अधिक उद्देश्यपूर्ण और शिक्षार्थी-केंद्रित बनाया जा सकता है (Tsimpli & Lightfoot, 2020)।

सिंह और कथूरिया (2024) ने एनईपी 2020 तथा बहुभाषिक कक्षाओं के संदर्भ में शिक्षक-शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया है। मैथ्यालु (2024) ने भारतीय विज्ञान कक्षाओं में विद्यार्थियों की घरेलू भाषाओं को विषय-वस्तु और अवधारणा-निर्माण से जोड़ने में बहुभाषिक शिक्षण की संभावनाएँ रेखांकित की हैं। हाल का कौशल और गुहा (2026) का अध्ययन भी बताता है कि बहुभाषिक कक्षाओं के लिए केवल औपचारिक भाषा-नीति पर्याप्त नहीं; संप्रेषणात्मक और समावेशी शिक्षण-रणनीतियाँ भी आवश्यक हैं।

उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट है कि बहुभाषिकता को संसाधन के रूप में स्वीकार करना, शिक्षक की तैयारी, विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता और भाषा को विषय-वस्तु के अधिगम से जोड़ना महत्त्वपूर्ण हैं। तथापि हिन्दी शिक्षण के संदर्भ में बहुभाषिकता, बहुविषयकता, समग्र विकास, साहित्य, तकनीकी संसाधन, शिक्षार्थी-केंद्रितता और बहुआयामी आकलन को एक ही शिक्षणशास्त्रीय ढाँचे में जोड़कर देखने की आवश्यकता बनी हुई है। प्रस्तुत अध्ययन इसी अंतराल को संबोधित करता है। इसका केंद्रीय तर्क है कि हिन्दी शिक्षण का रूपांतरण केवल मातृभाषा या तीन-भाषा सूत्र तक सीमित नहीं, बल्कि कक्षा की संपूर्ण शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में परिवर्तन से संबंधित है।

4. बहुविषयक एवं समग्र शिक्षा : वैचारिक आधार

4.1 बहुविषयक शिक्षा

बहुविषयक शिक्षा में ज्ञान को अलग-अलग विषयों की स्वतंत्र सीमाओं में देखने के स्थान पर विभिन्न विषयों, ज्ञान-क्षेत्रों और अनुभवों के बीच सार्थक संबंध स्थापित किए जाते हैं। इसका उद्देश्य विषयों की

विशिष्टता समाप्त करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को वास्तविक समस्याओं को अनेक दृष्टिकोणों से समझने और ज्ञान को नए संदर्भों में प्रयोग करने में सक्षम बनाना है ।

हिन्दी के संदर्भ में 'जल संरक्षण' जैसे विषय को विज्ञान के तथ्यों, सामाजिक प्रभावों, स्थानीय अनुभवों और हिन्दी में रिपोर्ट, संवाद, पोस्टर या भाषण के माध्यम से जोड़ा जा सकता है। यहाँ हिन्दी केवल विषय-वस्तु व्यक्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि विभिन्न विषयों से प्राप्त ज्ञान को जोड़ने का साधन भी बनती है।

4.2 समग्र शिक्षा

समग्र शिक्षा विद्यार्थी के विकास को केवल शैक्षणिक उपलब्धि तक सीमित नहीं करती। इसमें संज्ञानात्मक, भावात्मक, सामाजिक, नैतिक, सृजनात्मक, सांस्कृतिक और सौंदर्यात्मक पक्षों के परस्पर संबंध को महत्त्व दिया जाता है। एनईपी 2020 तथा एनसीएफ-एसई 2023 वैचारिक समझ, सृजनात्मकता, मूल्य और सकारात्मक प्रवृत्तियों को विद्यार्थी-अधिगम के महत्त्वपूर्ण तत्वों के रूप में रेखांकित करते हैं (शिक्षा मंत्रालय, 2020; एनसीईआरटी, 2023)।

हिन्दी साहित्य की विविध विधाएँ इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। कहानी, कविता, नाटक, जीवनी, संस्मरण और लोक-साहित्य विद्यार्थियों को मानवीय अनुभवों, संस्कृति और जीवन-मूल्यों से जोड़ सकते हैं। किंतु मूल्य केवल पाठ पढ़ लेने से स्वतः विकसित नहीं होते; संवाद, चिंतन और जीवन-संदर्भों से जुड़ाव आवश्यक है।

4.3 बहुविषयकता और समग्रता का संबंध

बहुविषयकता ज्ञान की व्यापकता प्रदान करती है, जबकि समग्र शिक्षा उस ज्ञान के साथ विद्यार्थी के बौद्धिक, भावात्मक, सामाजिक और मूल्यात्मक विकास पर ध्यान देती है। हिन्दी की कक्षा इन दोनों को जोड़ने का प्रभावी क्षेत्र बन सकती है क्योंकि भाषा ज्ञान को ग्रहण करने, अर्थ निर्मित करने, संवाद करने और व्यक्त करने का माध्यम है।

5. एनईपी 2020 और हिन्दी शिक्षा : प्रमुख शिक्षणशास्त्रीय आयाम

5.1 बहुभाषिकता : बाधा नहीं, संसाधन

भारत की कक्षा में विद्यार्थियों का भाषायी भंडार एक जैसा नहीं होता। एनईपी 2020 बहुभाषिकता को महत्त्व देती है और प्रारंभिक स्तर पर मातृभाषा, स्थानीय भाषा अथवा विद्यार्थी से परिचित भाषा के माध्यम से सीखने को प्रोत्साहित करती है। तीन-भाषा सूत्र में लचीलापन रखते हुए कम-से-कम दो भारतीय भाषाओं के अध्ययन की बात की गई है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)।

नई भाषा सीखते समय विद्यार्थी पहले से विकसित शब्द-ज्ञान, ध्वनि-संबंधी समझ, अभिव्यक्ति की आदतों, पाठ-बोध की रणनीतियों और साहित्यिक अनुभवों का उपयोग कर सकता है। हिन्दी कक्षा में स्थानीय शब्दों, मुहावरों और लोक-अभिव्यक्तियों को सम्मानपूर्वक शामिल किया जा सकता है। उदाहरण के लिए 'दरवाज़ा' के साथ हरियाणवी परिवेश में प्रयुक्त 'किवाड़' शब्द पर चर्चा कर विद्यार्थियों से विभिन्न भाषाओं में समान अर्थ वाले शब्द खोजने और उनके प्रयोग की तुलना करने को कहा जा सकता है। इससे मानक हिन्दी सीखना विद्यार्थी के अपने भाषायी अनुभव से जुड़ता है।

बहुभाषिकता सहपाठी अधिगम को भी सशक्त कर सकती है। विभिन्न भाषायी पृष्ठभूमियों के विद्यार्थी दैनिक बातचीत, समूह-कार्य और सहयोगात्मक गतिविधियों के माध्यम से शब्दावली और अभिव्यक्ति सीख सकते हैं। शिक्षक को भाषायी भिन्नता को त्रुटि मात्र न मानकर सीखने के अवसर के रूप में देखना चाहिए।

5.2 हिन्दी : ज्ञान-निर्माण और संप्रेषण का माध्यम

भाषा का संबंध केवल भाषा-विषय के अधिगम से नहीं है। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, पर्यावरण या गणित की समस्या-स्थिति को समझने के लिए भी विद्यार्थी को भाषा के माध्यम से अर्थ ग्रहण करना पड़ता है। इसलिए हिन्दी और अन्य विषयों का संबंध दोतरफा है। हिन्दी अन्य विषयों के ज्ञान को समझने और व्यक्त करने में सहायता करती है, जबकि अन्य विषयों से प्राप्त ज्ञान हिन्दी के शब्द-भंडार, संदर्भ-बोध और अभिव्यक्ति को समृद्ध करता है।

उदाहरणतः जल प्रदूषण पर काम करते समय विद्यार्थी विज्ञान से कारण और प्रभाव समझे, सामाजिक संदर्भों पर विचार करे, स्थानीय स्थिति का अवलोकन करे और हिन्दी में रिपोर्ट, भाषण या लेख तैयार करे। गणित की समस्या-स्थिति में भी प्रश्न की भाषा, उपलब्ध जानकारी और अपेक्षित समाधान को समझना आवश्यक है। इस प्रकार बहुविषयक हिन्दी शिक्षण कृत्रिम गतिविधि जोड़ने के बजाय वास्तविक ज्ञान-अधिगम से जुड़ता है।

5.3 शिक्षार्थी-केंद्रितता और शिक्षक की बदलती भूमिका

शिक्षार्थी-केंद्रित हिन्दी कक्षा में शिक्षक केवल पाठ का अर्थ बताने वाला नहीं, बल्कि मार्गदर्शक, सुविधादाता और अधिगम-अनुभवों का संयोजक होता है। विद्यार्थी को प्रश्न करने, विकल्प चुनने, अपने अनुभव साझा करने और विभिन्न माध्यमों से अभिव्यक्त होने के अवसर मिलने चाहिए।

किसी कहानी के बाद केवल पाठ्यपुस्तक के प्रश्न पूछने के स्थान पर ‘यदि आप उस परिस्थिति में होते तो क्या करते?’ या ‘क्या कहानी का अंत अलग हो सकता है?’ जैसे प्रश्न पूछे जा सकते हैं। विद्यार्थी वैकल्पिक अंत लिख सकता है, संवाद प्रस्तुत कर सकता है, चित्र बना सकता है या कहानी का नाट्य रूपांतरण कर सकता है। इससे एक प्रश्न–एक सही उत्तर की परंपरा से आगे बढ़कर विद्यार्थी की स्वायत्तता और सृजनात्मकता को स्थान मिलता है।

शिक्षक का कार्य हर उत्तर को पहले से निर्धारित सही उत्तर की ओर ले जाना नहीं, बल्कि ऐसे प्रश्न और परिस्थितियाँ बनाना है जिनसे विद्यार्थी स्वयं अर्थ निर्मित करे, तर्क करे और अपनी समझ विकसित करे।

5.4 साहित्य और समग्र विकास

हिन्दी साहित्य भाषा-अधिगम को जीवन-अनुभव से जोड़ने का सशक्त माध्यम है। कहानी, कविता, नाटक, जीवनी, संस्मरण और लोक-साहित्य के माध्यम से विद्यार्थी कल्पना, संवेदना, आलोचनात्मक चिंतन और सांस्कृतिक समझ विकसित कर सकता है। पात्रों के निर्णय पर चर्चा, वैकल्पिक अंत, भूमिका-अभिनय, कविता को चित्र या संगीत से जोड़ना तथा पाठ की समस्या को अपने जीवन से जोड़ना साहित्य को अनुभवात्मक बनाते हैं।

साहित्य में साहस, ईमानदारी, परोपकार, त्याग, संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्य उपस्थित हो सकते हैं। इन मूल्यों को प्रभावी बनाने के लिए पाठ के बाद संवाद और चिंतन आवश्यक है; केवल मूल्य का उल्लेख पर्याप्त नहीं।

5.5 व्यक्तिगत भिन्नताएँ और अभिव्यक्ति के विकल्प

हर विद्यार्थी की रुचि, क्षमता, भाषायी पृष्ठभूमि और अभिव्यक्ति की शैली अलग हो सकती है। इसलिए एक ही पाठ पर लिखित उत्तर के साथ मौखिक प्रस्तुति, चित्र, नाटक, संवाद, कविता अथवा डिजिटल प्रस्तुति जैसे विकल्प दिए जा सकते हैं। इससे विद्यार्थी अपनी समझ व्यक्त करने का उपयुक्त माध्यम चुन सकता है और सीखने में अधिक स्वायत्त बनता है।

5.6 तकनीकी संसाधनों का उद्देश्यपूर्ण प्रयोग

डिजिटल तकनीक हिन्दी शिक्षण में श्रव्य, दृश्य और अंतःक्रियात्मक अनुभवों की संभावनाएँ बढ़ाती है। कविता का श्रव्य-पाठ, कहानी का एनीमेशन, उच्चारण-अभ्यास, विद्यार्थियों की आवाज़ रिकॉर्ड करना, डिजिटल कहानी और अंतःक्रियात्मक अभ्यास उपयोगी हो सकते हैं। उपयुक्त कृत्रिम बुद्धिमत्ता-सहायित संसाधन भी रचनात्मक गतिविधियों में सहायक हो सकते हैं।

किन्तु तकनीक का उद्देश्य केवल कक्षा को आकर्षक बनाना नहीं होना चाहिए। यदि विद्यार्थी केवल वीडियो देखता है तो वह निष्क्रिय रह सकता है; यदि वह वीडियो पर चर्चा करता है, अपनी कहानी रिकॉर्ड करता है, उसका विश्लेषण करता है या स्वयं सामग्री बनाता है, तभी तकनीक अधिगम-संसाधन बनती है।

6. हिन्दी शिक्षण में आकलन की बदलती अवधारणा

यदि शिक्षा का उद्देश्य समझ, अनुप्रयोग, चिंतन, सृजनात्मकता, संप्रेषण और सहयोग विकसित करना है, तो आकलन भी केवल लिखित परीक्षा तक सीमित नहीं रह सकता। एनईपी 2020 अधिक नियमित, रचनात्मक और योग्यता-आधारित आकलन की दिशा प्रस्तुत करती है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)।

हिन्दी में लिखित परीक्षा का अपना महत्त्व है, किंतु पढ़ना, लिखना, सुनना और बोलना, विचार-अभिव्यक्ति, कल्पना, तर्क और सृजनात्मकता जैसी क्षमताओं के लिए विविध प्रमाण आवश्यक हैं। कहानी का वैकल्पिक अंत, नाट्य रूपांतरण, पात्र की डायरी, मौखिक प्रस्तुति, समूह-चर्चा, सस्वर पाठ, परियोजना या डिजिटल प्रस्तुति ऐसे विकल्प हो सकते हैं।

आकलन को अधिगम की निरंतर प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। शिक्षक विद्यार्थियों की चर्चा, प्रश्न, समूह-कार्य, लेखन में सुधार और गतिविधियों में प्रदर्शन का अवलोकन कर सकता है। रचनात्मक आकलन में अंक देने के साथ विशिष्ट प्रतिपुष्टि दी जाए और विद्यार्थी को उस आधार पर अपनी रचना सुधारने का अवसर मिले।

संचयी अभिलेख, कार्य-संग्रह, विद्यार्थी की रचनाएँ और शिक्षक के अवलोकन-टिप्पणियाँ समय के साथ प्रगति समझने में सहायक हो सकती हैं। लिखित परीक्षा को समाप्त करने की आवश्यकता नहीं; उसे व्यापक आकलन व्यवस्था के एक घटक के रूप में देखना अधिक उपयुक्त है।

7. कार्यान्वयन की प्रमुख चुनौतियाँ

नीति की दृष्टि को वास्तविक कक्षा में बदलने के लिए केवल पाठ्यक्रम परिवर्तन पर्याप्त नहीं है। शिक्षक की तैयारी, विद्यालयी संस्कृति, समय, संसाधन और आकलन व्यवस्था में भी समानांतर परिवर्तन आवश्यक हैं।

7.1 शिक्षक-शिक्षा

बहुभाषिक और बहुविषयक कक्षा के लिए शिक्षक को केवल हिन्दी विषय-ज्ञान ही नहीं, बल्कि बहुभाषिक शिक्षण, अंतर्विषयी योजना, अनुभवात्मक अधिगम, समावेशी व्यवहार, तकनीक और विविध आकलन की समझ भी चाहिए।

7.2 परीक्षा और समय का दबाव

यदि अंतिम मूल्यांकन स्मृति-आधारित है तो शिक्षक और विद्यार्थी पुनः परीक्षा-केंद्रित पद्धति की ओर लौट सकते हैं। बहुविषयक गतिविधियों के लिए समय भी चाहिए; इसलिए अलग-अलग गतिविधियाँ बढ़ाने के बजाय उन्हें पाठ्यवस्तु में ही समाहित करना अधिक व्यावहारिक है।

7.3 भाषायी विविधता का प्रबंधन

हर शिक्षक को कक्षा की सभी भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक नहीं। विद्यार्थियों की भाषायी विशेषज्ञता को संसाधन बनाकर स्थानीय शब्दों, मुहावरों और लोक-अभिव्यक्तियों का संग्रह एवं तुलना कराई जा सकती है।

7.4 संसाधन और तकनीकी असमानता

सभी विद्यालयों में इंटरनेट, स्मार्ट बोर्ड, भाषा प्रयोगशाला या डिजिटल उपकरण समान रूप से उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए तकनीकी संसाधन का चयन उपलब्धता और अपेक्षित अधिगम-परिणाम दोनों को ध्यान में रखकर होना चाहिए।

7.5 शिक्षक की दृष्टि और विद्यालयी सहयोग

यदि भाषायी विविधता को समस्या, स्वतंत्र अभिव्यक्ति को अनुशासनहीनता और अनेक उत्तरों को मूल्यांकन की कठिनाई माना जाएगा तो शिक्षार्थी-केंद्रित दृष्टि प्रभावी नहीं होगी। बहुविषयक शिक्षा के लिए विषय-शिक्षकों के बीच सहयोग भी आवश्यक है।

8. सुझाव एवं भावी दिशा

8.1 बहुभाषिकता को संसाधन बनाना

स्थानीय शब्दों, मुहावरों, कहावतों और लोक-अभिव्यक्तियों का संग्रह तथा हिन्दी से तुलना कराई जाए। सहपाठी अधिगम को प्रोत्साहित किया जाए और भाषायी भिन्नता का सम्मान किया जाए।

8.2 हिन्दी को अन्य विषयों से सार्थक रूप से जोड़ना

बहुविषयकता के नाम पर कृत्रिम गतिविधियाँ न जोड़ी जाएँ। ऐसे विषय चुने जाएँ जिनमें विद्यार्थी वास्तविक ज्ञान प्राप्त करे और उसे हिन्दी में समझे, विश्लेषित करे तथा व्यक्त करे।

8.3 साहित्य को अनुभव और जीवन से जोड़ना

शब्दार्थ और प्रश्नोत्तर से आगे बढ़कर वैकल्पिक अंत, भूमिका-अभिनय, संवाद, चित्र, संगीत और जीवन-संदर्भ आधारित चर्चा का प्रयोग किया जाए।

8.4 विद्यार्थी को चुनाव और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देना

एक ही अधिगम-लक्ष्य को लिखित, मौखिक, दृश्य, नाट्य या डिजिटल माध्यमों से व्यक्त करने के विकल्प दिए जाएँ।

8.5 शिक्षक-शिक्षा और विद्यालयी सहयोग

शिक्षक-प्रशिक्षण में बहुभाषिक शिक्षण, अंतर्विषयी पाठ-योजना, अनुभवात्मक अधिगम, डिजिटल शिक्षण और विविध आकलन को स्थान मिले। हिन्दी शिक्षक अन्य विषय-शिक्षकों के साथ संयुक्त परियोजनाएँ बनाएँ।

8.6 तकनीक और आकलन का संतुलित प्रयोग

तकनीक का चयन अधिगम-परिणाम के आधार पर हो और विद्यार्थियों को केवल सामग्री देखने के बजाय चर्चा, निर्माण, रिकॉर्डिंग और आत्म-संशोधन में सक्रिय किया जाए। आकलन में लिखित परीक्षा के साथ मौखिक, रचनात्मक, परियोजना-आधारित, कार्य-संग्रह और निरंतर प्रतिपुष्टि को उचित स्थान दिया जाए।

9. निष्कर्ष

एनईपी 2020 और एनसीएफ-एसई 2023 भारतीय शिक्षा को अधिक समग्र, बहुभाषिक, बहुविषयक, अनुभवात्मक और शिक्षार्थी-केंद्रित बनाने की दिशा प्रस्तुत करते हैं। हिन्दी शिक्षण के संदर्भ में इसका अर्थ

केवल नई गतिविधियों या तकनीकी साधनों को जोड़ना नहीं, बल्कि भाषा और सीखने की पूरी प्रक्रिया को पुनः देखने से है।

हिन्दी को पाठ्यपुस्तक, व्याकरण और परीक्षा के विषय तक सीमित करने के स्थान पर ज्ञान, चिंतन, संप्रेषण, साहित्यिक अनुभव और अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में देखा जाना चाहिए। विद्यार्थी का मातृभाषीय एवं स्थानीय भाषायी भंडार हिन्दी-अधिगम में संसाधन बन सकता है। इसी प्रकार अन्य विषयों से प्राप्त ज्ञान हिन्दी के शब्द-भंडार और संदर्भ-बोध को समृद्ध करता है, जबकि हिन्दी अन्य विषयों को समझने और व्यक्त करने में सहायता करती है।

इस परिवर्तन के लिए शिक्षक को ज्ञान के एकमात्र स्रोत से मार्गदर्शक और सुविधादाता की भूमिका में आना होगा; विद्यार्थी को प्रश्न करने, चुनाव करने और विभिन्न माध्यमों से अभिव्यक्त होने के अवसर देने होंगे; तथा आकलन को विविध अधिगम-अनुभवों को पहचानने वाला बनाना होगा। तकनीक इन परिवर्तनों को सहयोग दे सकती है, लेकिन उसका प्रभाव उसकी उपलब्धता से अधिक उसके उद्देश्यपूर्ण शैक्षिक प्रयोग पर निर्भर करेगा।

अतः हिन्दी की भावी कक्षा ऐसी होनी चाहिए जहाँ बहुभाषिकता को सम्मान, विषयों के बीच संबंध को अवसर, साहित्य को अनुभव, तकनीक को साधन और आकलन को अधिगम-सुधार का माध्यम माना जाए। इस समन्वित दृष्टि से हिन्दी की कक्षा केवल भाषा-कौशल विकसित करने का स्थान न रहकर ज्ञान, संवेदना, संस्कृति, सृजनात्मकता और मानवीय मूल्यों के निर्माण का सशक्त मंच बन सकती है।

10. संदर्भ-सूची

हिन्दी में उपलब्ध आधिकारिक संदर्भ

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। नई दिल्ली: भारत सरकार।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्। (2023)। स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्। (2024)। विद्यालयों में स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2023 के कार्यान्वयन संबंधी सलाह। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।

सिंह, वन्दना। (2025)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और हिन्दी शिक्षण। उपलब्ध शोध-पत्र।

English references

Jha, A., & Dalal, G. (2024). Needs Analysis for Incorporating Translanguaging in EMI/ELT Classrooms Exploring Multiculturalism in NEP 2020. Journal of Indian Education, 50(1), 167–203.

Kaushal, S., & Guha, A. (2026). Negotiating बहुभाषिकता *in Indian Classrooms: Teacher-Student Communication in Policy and Practice. Educational Researcher. https://doi.org/10.3102/0013189X261457603*

Muthyalu, A. (2024). Translanguaging and Conceptual Clarity: Indian Science Teachers' Critical Reflections on Multilingual Pedagogy. Journal of Education, Language, and Ideology, 2(2), 349–371. https://doi.org/10.5281/zenodo.15237744

Singh, R. K., & Kathuria, S. J. (2024). Rethinking Teacher Education in Context to NEP 2020 and Multilingual Classrooms. International Journal of Research - GRANTHAALAYAH, 12(12), 1–11. https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v12.i12.2024.5802

Tsimpli, I. M., & Lightfoot, A. (2020, November 25). India: Investigating बहुभाषिक *classrooms. International Institute for Educational Planning (IIEP), UNESCO.*

UNESCO. (2025). Bhasha Matters: State of the Education Report for India 2025—Mother Tongue and Multilingual Education. UNESCO, New Delhi.